सत्रीय कार्य

(संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.ए.ई–182 / BAG/BAHDH
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.ए.ई–182 / 2026-2027
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड–क

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 800 शब्दों में दीजिए : 20× 2=40

1. भाषा को परिभाषित करते हुए भाषा के विविध रुपों पर विचार कीजिए।

   अथवा

   हिंदी भाषा के स्वरुप और उसके क्षेत्र पर प्रकाश डालिए।

2. वर्ण विचार का आशय स्पष्ट करते हुए वर्ण और लिपि के अंतर्संबंध पर एक टिप्पणी लिखिए।

   अथवा

   स्वर और व्यंजन के उच्चारण स्थान का परिचय देते हुए उसके उच्चारण में होने वाले प्रयत्नों पर विचार कीजिए।

खंड –ख

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 400 शब्दों में दीजिए : 10×4=40

3. स्वर को परिभाषित करते हुए स्वरों के वर्गीकरण के आधार को स्पष्ट कीजिए।
4. व्यंजन वर्णों की विशेषताओं पर विचार कीजिए।
5. वर्ण को परिभाषित करते हुए हिंदी की वर्ण व्यवस्था का परिचय दीजिए।
6. क्रिया और उसके प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

खंड –ग

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए : 5×4=20

7. निपात
8. कारक
9. अव्यय
10. मौखिक संप्रेषण

1. भाषा को परिभाषित करते हुए भाषा के विविध रूपों पर विचार कीजिए।

उत्तर

भाषा मनुष्य द्वारा अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों और आवश्यकताओं को व्यक्त करने तथा दूसरों के विचार समझने के लिए प्रयुक्त एक व्यवस्थित संकेत-प्रणाली है। इन संकेतों का प्रमुख आधार अर्थपूर्ण ध्वनियाँ हैं, जिन्हें सामाजिक स्वीकृति और व्याकरणिक नियमों के अनुसार शब्दों और वाक्यों में व्यवस्थित किया जाता है। भाषा केवल बोलने का साधन नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कृति, सामाजिक संबंध और सामूहिक स्मृति को आगे बढ़ाने का माध्यम भी है। जब कोई बच्चा अपने परिवेश में शब्दों का प्रयोग सीखता है, तो वह उनके साथ समाज के व्यवहार और मूल्यों को भी ग्रहण करता है।

भाषा की मूल विशेषताएँ समझने पर उसके विविध रूपों की पहचान आसान होती है। भाषा सामाजिक होती है क्योंकि उसके शब्दों और अर्थों को एक भाषिक समुदाय स्वीकार करता है। वह परंपरागत भी होती है, क्योंकि ध्वनि और अर्थ का संबंध अधिकांशतः प्रचलन से बनता है; जैसे ‘जल’ और ‘पानी’ अलग शब्द हैं, किंतु समान वस्तु को व्यक्त कर सकते हैं। भाषा परिवर्तनशील है। समाज, तकनीक, शिक्षा और संपर्क के साथ उसमें नए शब्द आते हैं, पुराने प्रयोग बदलते हैं और वाक्य-रचना में भी विविधता उत्पन्न होती है। भाषा रचनात्मक भी है; सीमित शब्दों और नियमों से अनगिनत नए वाक्य बनाए जा सकते हैं।

मौखिक और लिखित रूप

भाषा का सबसे स्वाभाविक रूप मौखिक है। बोलने वाला स्वर, गति, विराम, बलाघात, चेहरे के भाव तथा परिस्थितियों की सहायता से अर्थ प्रकट करता है। परिवार में बातचीत, कक्षा में चर्चा और बाजार में संवाद इसके उदाहरण हैं। मौखिक भाषा में तत्काल प्रतिक्रिया मिलती है; इसलिए वक्ता अपने कथन को सुनने वाले की समझ के अनुसार बदल सकता है। लिखित भाषा में विचार लिपि के संकेतों के माध्यम से प्रस्तुत किए जाते हैं। पत्र, समाचार, पुस्तक, कार्यालयी सूचना और डिजिटल संदेश इसके प्रमुख रूप हैं। लेखन विचार को समय और स्थान की सीमा से आगे पहुँचाता है, किंतु उसमें स्पष्ट वाक्य, विरामचिह्न और सुव्यवस्थित अनुच्छेद अधिक आवश्यक हो जाते हैं। लिखित रूप का विकास मौखिक भाषा के बाद हुआ; दोनों एक-दूसरे को समृद्ध करते हैं।

मानक भाषा और बोलियाँ

एक विस्तृत भाषिक क्षेत्र में उच्चारण, शब्दावली और व्याकरण के स्थानीय अंतर दिखाई देते हैं। क्षेत्रीय स्तर पर प्रचलित इन रूपों को बोलियाँ कहा जाता है। उत्तर भारत में ब्रज, अवधी, बुंदेली, हरियाणवी और भोजपुरी जैसी भाषिक विविधताओं के उदाहरण मिलते हैं; इनकी स्वतंत्र साहित्यिक और सांस्कृतिक परंपराएँ भी हैं। मानक भाषा वह अपेक्षाकृत नियमित रूप है जिसे शिक्षा, प्रशासन, प्रकाशन और व्यापक संपर्क में अधिक स्वीकार किया जाता है। आधुनिक मानक हिंदी का आधार मुख्यतः खड़ी बोली है। मानक भाषा का उद्देश्य व्यापक संप्रेषण में सुविधा देना है, किसी क्षेत्रीय रूप को हीन सिद्ध करना नहीं। स्थानीय बोलियों के शब्द, कहावतें और लोकगीत भाषा की सांस्कृतिक संपदा हैं।